ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 41 कुल पृष्ठ-16 15 से 21 जून, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 ज्ये. कृ.-12

राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी जोधपुर में
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य समारोह हुआ सम्पन्न
देश विदेश के आर्य नेताओं, संन्यासियों एवं विद्वानों ने किया सम्बोधित
ऐतिहासिक शोभा यात्रा की पूरे जोधपुर शहर में रही गूंज
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की हत्या का अंग्रेजों ने रचा था षड्यन्त्र - स्वामी आर्यवेश
स्वामी दयानन्द जी आर्ष शिक्षा के प्रबल समर्थक थे - स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
पूरे देश में सद्भावना का वातावरण तैयार करने की आवश्यकता है - प्रो. विट्ठलराव आर्य
विश्व बन्धुत्व की भावना से सामाजिक समरसता स्थापित की जा सकती है - पं. माया प्रकाश त्यागी
स्वामी दयानन्द जी ने देश की आजादी के लिए क्रांतिकारी तैयार किये - किरणजीत सिंह सिन्धु
मानवता के लिए कार्य करने वाला ही सच्चा मनुष्य है - सुभाष गर्ग
आर्य समाज संगठन मानवता के लिए कार्य करता है - श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी
आर्य समाज के संस्कार बचपन से पूज्य पिता जी से मिले - मनीषा पंवार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयंती वर्ष और जोधपुर आगमन के 140 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जोधपुर में 26, 27 व 28 मई, 2023 को आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, विश्वविख्यात आर्य संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। महासम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से हजारों आर्यजनों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

सम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजनों के दल 25 मई को ही जोधपुर पहुंचने लगे थे। सभी आगन्तुक आर्यों के लिए आर्य वीर दल एवं जोधपुर की आर्य समाजों की ओर से आवास की सुन्दर एवं समुचित व्यवस्था की गई थी। आर्य वीर दल के कार्यकर्ता आर्यों के सम्मान के लिए प्राणपण से जुटे हुए थे। रेलवे स्टेशन तथा हवाई अड्डे से आने वाले आर्यजनों को निर्धारित स्थानों पर कार्यकर्ता पहुंचा रहे थे। सभी के भोजन, जलपान तथा आवास की शानदार व्यवस्था की गई थी। इन सारी व्यवस्थाओं के लिए विविध समितियों का गठन करके सब कार्यकर्ताओं को दायित्व सौंपा गया था। जोधपुर नगर को बैनरों, होर्डिगों, ओ३म् ध्वज तथा झण्डियों से सजाया गया था। पूरा जोधपुर शहर ओ३म् के झण्डों से अपनी छटा बिखेर रहा था।

26 मई को प्रातः 6 बजे आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं की शाखा प्रारम्भ हुई। जिसका संचालन आर्य वीर दल जोधपुर के संचालन श्री उमेद सिंह आर्य ने किया। उसके पश्चात् योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसका संचालन योगनिष्ठ एवं अध्यात्मनिष्ठ विदुषी बहन पूनम आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी अभियान ने किया। आर्य वीर दल की शाखा एवं योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम तीनों दिन नियमित चलता रहा।

प्रातः 8 बजे चतुर्वेद शतकम् यज्ञ आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आर्य लेखक परिषद् के अध्यक्ष आचार्य वेद प्रिय शास्त्री के ब्रह्मत्व में

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

देश को नशामुक्त बनाना आवश्यक है – स्वामी रामवेश

सामाजिक सौहार्द से ही राष्ट्र उन्नति करेगा – गोस्वामी सुशील जी महाराज

वैदिक विचारधारा ही भारत को विश्वगुरु का स्थान दिला सकती है – स्वामी आदित्यवेश

महर्षि दयानन्द अप्रतिम दार्शनिक थे – डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

राष्ट्र की रक्षा पाखण्ड को मिटाने से ही सम्भव है – बिरजानन्द एडवोकेट

त्रिदिवसीय चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ के ब्रह्मा एवं यजमानों की सूची

आचार्य वेद प्रिय शास्त्री अध्यक्ष आर्य लेखक परिषद्, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री अध्यक्ष आर्य पुरोहित सभा दिल्ली, एवं आचार्या पवित्रा विद्यालंकार कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस, क्रमशः तीनों दिन ब्रह्मा पद पर सुशोभित रहे तथा सर्वश्री भंवरलाल आर्य एवं श्रीमती प्रेमलता आर्या, श्री अमित जी एवं श्रीमती हिमांशी आर्या, श्री दलपत सिंह आर्य एवं श्रीमती प्रीति आर्या, श्री शिव प्रकाश सोनी एवं श्रीमती संतोष, श्री गजे सिंह भाटी एवं श्रीमती लीला भाटी, श्री महेन्द्र सिंह आर्य एवं श्रीमती भारती आर्या (हिसार), श्री भंवर लाल हठवाल एवं श्रीमती संजना, श्री नरेश कुमार चौहान एवं श्रीमती भागवन्ती, श्री विनोद आचार्य एवं श्रीमती चन्द्रकला, श्री नरोत्तम एवं श्रीमती सुनीता, श्री अर्जुन पुंगलिया एवं श्रीमती संजना पुंगलिया, श्री कुलदीप सिंह आर्य एवं श्रीमती भावना आदि महानुभावों ने यजमान बनकर यज्ञ को श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ सम्पन्न कराया। यज्ञ में व्यवस्था का पूरा दायित्व श्री चैनाराम आर्य पुरोहित ने संभाला। उनके साथ श्री विक्रम सिंह आर्य ने भी सहयोग किया।

प्रारम्भ हुआ जो 10 बजे तक चला। इस अवसर पर बहन कल्याणी आर्या के भजन एवं आचार्य वेद प्रिय शास्त्री का प्रवचन हुआ। यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण पूरे सम्मेलन के अध्यक्ष एवं आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के उपरान्त संक्षिप्त उद्बोधन में सभी आर्यजनों का आह्वान करते हुए कहा कि ओ३म् की पताका पूरे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रचार एवं प्रसार की प्रेरणा दे रही है। इस संसार की रचना करने वाले परमपिता परमेश्वर का निज नाम ओ३म् है। अतः उस ईश्वर की छत्रछाया में हम आर्य लोग कृण्वन्तो विश्वार्यम् के लक्ष्य को पूरा करने के लिए पूरे विश्व को एक परिवार अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में मानते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें। हमारे लिए पूरा संसार कार्य क्षेत्र है और उस संसार का उपकार करना हमारा परम उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने निर्धारित किया है। हम अपने उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सभी प्रकार की संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर मानव मात्र के प्रति प्रेम तथा मैत्री का भाव बनाकर चलेंगे तो निश्चित रूप से हम महर्षि के सपनों का संसार बना पायेंगे। समाज में व्याप्त जातिवाद, साम्प्रदायिकता, धार्मिक अन्धविश्वास, नारी उत्पीड़न तथा आर्थिक शोषण ईश्वरीय व्यवस्था के विरुद्ध है। इन्हीं मुद्दों पर हमें पूरे समाज को बिना किसी भेद भाव के संगठित करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। हमारे इस तीन दिन के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम जोधपुर की इस ऐतिहासिक धरती से पूरे विश्व को एक संदेश दे सकें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद को मानव मात्र के लिए उपयोगी मानते थे। वेद को ईश्वरीय ज्ञान तथा स्वतः प्रमाण मानते थे। अतः मनुष्यकृत जातिप्रथा, सम्प्रदायवाद, नर–नारी असमानता, आर्थिक शोषण, धार्मिक अन्धविश्वास आदि कुरीतियां पूरे समाज के लिए हानिकारक हैं और एक चुनौती हैं। महर्षि की दूसरी जन्म शती तथा उनके 140 वर्ष पूर्व जोधुपर आगमन के उपलक्ष्य में हम पूरे विश्व को यह बता सकें कि जाति, रंग, लिंग या गरीब–अमीर के आधार पर बंटे हुए समाज को बदलने की आवश्यकता है। इस तीन दिवसीय महासम्मेलन में आर्य समाज के विद्वान्, महर्षि दयानन्द जी के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालेंगे और यह महासम्मेलन निश्चित रूप से एक नई दिशा देने वाला सिद्ध होगा। ध्वजारोहण के उपरान्त कार्यक्रम मुख्य मंच से प्रारम्भ हुआ। हजारों आर्यजनों की प्रभावशाली उपस्थिति से खचाखच भरा विशाल पण्डाल और उसकी भव्यता लोगों के आकर्षण का विषय बनी हुई थी।

उद्घाटन सम्मेलन ठीक 10.30 बजे प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की और मंच का संयोजन तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने किया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की स्वागताध्यक्ष और जोधपुर शहर की यशस्वी विधायक बहन मनीषा पंवार ने कहा कि मैं सम्मेलन में आये हुए समस्त अतिथियों एवं आर्यजनों का हृदय से अभिनन्दन करती हूँ। उन्होंने कहा कि बचपन से आर्य समाज के संस्कार मुझे अपने पूज्य पिता स्व. श्री रामसिंह आर्य जी से मिले और उसी कारण मेरे रोम–रोम में आर्य समाज एवं उसकी विचारधारा समाई हुई है। आज मैं अपना सौभाग्य समझती हूं कि देश के कोने–कोने से आये हुए आर्यजनों का स्वागत करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ है। आर्य समाज की विचारधारा मानव मात्र के उपकार की प्रेरणा देती है। आर्य समाज एक मानवतावादी संगठन है जो पूरे संसार के लोगों के कल्याण की भावना से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बनाया था। तीन दिन तक यहां आर्य समाज के सभी सम्मानित विद्वान्गण अपने विचार रखेंगे और हम सब लोगों का मार्गदर्शन करेंगे। मुझे पूरी आशा है कि आप सब लोगों के सहयोग से यह सम्मेलन ऐतिहासिक होगा। यदि सभी आर्यजनों तथा राजनेताओं के मन में वैदिक संस्कृति की उदात्त भावना पनप जाये तो निश्चित रूप से भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है। आज मैं अपने आपको धन्य महसूस कर रही हूँ कि जोधपुर की धरती पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने 140 वर्ष पूर्व आकर अपने विचारों के माध्यम से यहां के लोगों को जागरूक करने का कार्य किया था और उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हम आज उस महामानव के 200वें जन्म जयन्ती वर्ष तथा जोधपुर आगमन के 140 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यहाँ एकत्रित हुए हैं, इसके लिए मैं विशेष रूप से सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी तथा युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी महाराज के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूँ कि उनके सान्निध्य में यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपनी सफलता की ओर अग्रसर होने जा रहा है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के अध्यक्ष श्री सहदेव बेधड़क जी ने अपना ओजस्वी भजन प्रस्तुत किया। उन्होंने ऋषि दयानन्द जी के सन्देशों से भरा एक गीत प्रस्तुत करके लोगों को भाव विभोर कर दिया।

इस उद्घाटन सम्मेलन को अपने विचार रखते हुए बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामानंद प्रसाद जी ने कहा कि यह सम्मेलन ऐसे मौके पर आयोजित किया गया है जब पूरे देश को आर्य समाज की आवश्यकता है। इसलिए हम सब मनन करें कि आर्य समाज संगठन को अब तक कहाँ होना चाहिए था, परन्तु आज हम कहाँ पर आकर खड़े हो गये हैं। आर्य समाज की विचारधारा और स्वामी दयानन्द जी के सपनों को साकार करने के लिए हम सभी आर्यजनों को एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत को कैसे आर्य राष्ट्र बनाया जाए, इसके लिए हमें स्वामी दयानंद जी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करना होगा।

अजमेर के पूर्व विधायक तथा महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास भिनाय कोठी के कार्यकारी प्रधान श्री गोपाल बाहेती जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हम सबको अपने परिवारों में स्वामी दयानन्द जी के मन्तव्यों को लागू करना होगा। तभी स्वामी दयानन्द जी के सपनो को साकार किया जा सकता है। हमें अपने परिवार में प्रतिदिन हवन आदि संस्कार रूपी कार्यक्रम आयोजित करते रहना चाहिए। जब हमारे परिवार आर्य बनेंगे तो पूरा समाज आर्य बनाने में आसानी होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि स्वामी दयानन्द जी का राजस्थान की धरती से विशेष लगाव रहा था और उन्होंने राजस्थान के राजाओं को विशेष ज्ञान देकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया और वर्तमान में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी भी महर्षि दयानन्द जी के मन्तव्यों को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। उन्होंने अपने प्रदेश के लोगों को 8 रुपये में भरपेट भोजन उपलब्ध करवाने का निर्णय लेकर एक अनुपम कार्य किया है। श्री बिरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से सम्बन्धित अनेक संस्मरण सुनाए। उन्होंने कहा पाखण्डमुक्त समाज का निर्माण करके ही भारत विश्व गुरु बन सकता है।

आदिवासी क्षेत्र में घर-घर महर्षि का संदेश पहुंचायेंगे - आचार्य अंशुदेव

पर्यावरण की रक्षा के लिए यज्ञ करें तथा पेड़ लगायें - डॉ. कमल नारायण

महर्षि दयानन्द सरस्वती क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत थे - गोविन्द सिंह भण्डारी

आर्य समाज को सप्तक्रांति के मुद्दों पर कार्य करना होगा - रामानन्द प्रसाद सिंह

यज्ञ को व्यवहारिक रूप देना अत्यन्त आवश्यक है - आचार्य वेद प्रिय शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने कहा कि आज मैं सबसे पहले भाई राम सिंह आर्य जी को श्रद्धांजलि देता हूँ। उन्होंने वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ वैदिक परम्पराओं की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि भाई राम सिंह आर्य जी ने राजस्थान में आर्य समाज संगठन के लिए जो कार्य किया है उसकी झलक आज दिखाई दे रही है। उनकी योग्य सुपुत्री बेटी मनीषा पंवार आर्य सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने में अपना जो योगदान दे रही हैं वह काबिले तारीफ है। आर्य वीरों के उत्साह को देखकर मन को बहुत पसन्नता हो रही है। जोधपुर की धरती पर यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपनी एक अमिट छाप छोड़ेगा। इस सम्मेलन में पूरे देश तथा दुनिया के अन्य देशों से लोग भाग लेकर सम्मेलन की गरिमा बढ़ा रहे हैं। हम सभी को मिलकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए प्राण-पण से जुटकर कार्य करने की आवश्यकता है।

सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो विट्ठलराव आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानंद जी के 200वें जन्म जयंती वर्ष और उनके जोधपुर आगमन के 140 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यह सम्मेलन आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने जो प्रेरणा दी थी। आज हम सबको उनके विचारों के आधार पर कार्य करने की आवश्यकता है। हम सभी को चिंतन करने की आवश्यकता है कि सभी को जोड़कर चलें और पूरे संसार का उपकार करने के बारे में सोचें। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी और आर्य समाज की विचारधारा वसुधैव कुटुम्बकम् को मानती है। समाज में सद्भावना पैदा करके समरसता के साथ रहने की भावना को लागू करना ही मानवता का कार्य है। भारत की धरती पर सभी को सद्भाव से रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमें उदारवादी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कार्य करना चाहिए।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए पशुधन विकास बोर्ड, राजस्थान के अध्यक्ष एवं राज्यमंत्री श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी ने कहा कि मैं भी पूर्व में आर्य वीर दल का कार्यकर्ता रहा हूँ, मैं आर्य वीरदल परिवार का सदस्य हूँ। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने जो विचार रखा है वह बहुत ही प्रासंगिक है। आज इस बात की आवश्यकता है कि आर्य समाज को आगे आकर देश को एकजुट करने के लिए कार्य करना चाहिए। श्री सोलंकी जी ने आगे कहा कि आर्य समाज का आजादी के आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि इसमें हमारा जो भी सहयोग अपेक्षित होगा हम उसे अवश्य पूरा करेंगे और आर्य समाज को मजबूत बनाने में योगदान देते रहेंगे।

राजस्थान सरकार के तकनीकी शिक्षा मंत्री प्रो. सुभाष गर्ग जी ने कहा कि सर्वप्रथम मैं आर्य प्रतिनिधि सभा का धन्यवाद करता हूँ तथा माननीय श्री अशोक गहलोत जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ कि उनके निर्देश पर मैं इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आ सका। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के विचारों को आगे बढ़ाने की लिए कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने आर्य समाज के 10 नियमों के बारे में भी अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि आर्य समाज के जो नियम हैं वह पूरी मानवता के भले की बात करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार मानवता के लिए कार्य करने के लिए कृत संकल्पित है। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को आगे बढ़ाने की बजाय कुछ लोग अंधविश्वास और पाखण्ड को बढ़ावा देने में लगे हुए हैं, ऐसे लोगों से सावधान होकर सम्पूर्ण मानवता के लिए कार्य करने के लिए कमर कसकर आर्यजन आगे आयें। उन्होंने कहा वेद सत्य है। जो व्यक्ति मानवता के लिए कार्य करता है वही सच्चा मानव हो सकता है।

वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने विचार मंत्रोच्चार के साथ प्रारम्भ करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने 18 वर्ष की आयु में अपना घर छोड़ा और उत्तर भारत के अनेक प्रान्तों से होते हुए अनेक अध्ययन किया। 36 वर्ष की आयु में गुरु विरजानंद जी के पास पहुंचे और सत्य की खोज में अपना समय लगाया और अंत में उन्होंने निचोड़ निकाला कि वेद ही सत्य है और उन्होंने अपना पूरा जीवन सत्य की स्थापना के लिए समर्पित किया। स्वामी प्रणवानन्द जी ने वाराणसी को पाखण्ड का गढ़ बताया और कहा कि यदि वाराणसी सुधर जाए तो पूरा देश सुधर जाएगा। उन्होंने कहा कि वाराणसी के सारे पंडे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के तेज और ओज के आगे नतमस्तक थे और लाचार थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सामने उनकी एक न चलती थी। स्वामी दयानन्द जी ने कभी भी उनके लोभ लालच को स्वीकार नहीं किया, उसके बाद पंजाब में कार्य करते हुए राजस्थान में प्रवेश किया और राजस्थान की धरती पर सबसे अधिक समय तक कार्य किया और उसमें भी जोधपुर में सबसे अधिक समय लगाया। स्वामी दयानन्द जी ने कहा था कि यदि देश का राजा सुधर जाएगा तो सब सुधर जाएगा। उन्होंने तत्कालीन राजे-रजवाड़ों को लताड़ते हुए देश और समाज की भलाई के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया और देश को आजाद कराने के लिए उन्हें उद्वेलित किया। इसलिए जोधपुर के भाइयों बहनों का कर्तव्य है कि ऋषि के सपनों के लिए कार्य करें।

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज ही सर्वात्मना समर्पित संगठन है। आर्य समाज पूरे संसार के उपकार की बात करता है। स्वामी जी ने आर्य समाज द्वारा किये गए अनेक आंदोलनों का जिक्र करते हुए बताया कि आर्य समाज सदैव से सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए प्राण-पण से जुड़कर कार्य करने में संलग्न रहा है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि राजस्थान के जोधपुर की धरती से आर्य समाज का नया अध्याय लिखेंगे। सभी को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के साथ जुड़कर कार्य करना है। उन्होंने कहा कि जो लोग अंधविश्वास और पाखण्ड का समर्थन करते हैं, किसी का पिच्छलग्गू बनकर रहना चाहते हैं वे रहें। उन्होंने कहा कि आर्य समाज संगठन में हमारे साथ वे लोग जुड़कर कार्य करें जो महर्षि दयानन्द की विचारधारा तथा आर्य समाज संगठन के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करना चाहते हैं। स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने वाले ही सच्चे आर्य हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनेक

मानवता की सेवा ही आर्य समाज का उद्देश्य है – प्रेमपाल शास्त्री

वैदिक सिद्धान्त वैज्ञानिकता पर आधारित है – डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ही महिलाओं को दिलाया सम्मान – डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा

माँ बच्चे का प्रथम गुरु होती है – डॉ. पवित्रा विद्यालंकार

संस्मरण सुनते हुए लोगों को स्तब्ध कर दिया। उन्होंने स्वामी दयानन्द जी के दिल्ली दरबार का जिक्र करते हुए विस्तार से समाज को जोड़ने के लिए विचार रखे। उन्होंने बताया कि स्वामी दयानन्द जी का सरदार भगत सिंह के परिवार के साथ जो सम्बन्ध था उसी के परिणामस्वरूप सरदार अर्जुन सिंह ने पूरे परिवार को आर्य विचारधारा से ओत–प्रोत किया तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में झोंक दिया। उन्होंने बताया कि देश की आजादी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले क्रांतिकारियों पर आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का अत्यन्त प्रभावशाली छाप रही है। स्वामी आर्यवेश जी ने राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां के सम्बन्धों को भी विस्तार से सुनाया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को देश की एकता के लिए आगे आना होगा। देश में विघटनकारी प्रवृत्तियाँ बढ़ाई जा रही हैं। उससे लोग चिन्तित हैं, क्योंकि इससे देश और समाज का बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है। इसलिए आर्य समाज को अपने क्रांतिकारी विचारों के आधार पर देश में फैल रहे पाखण्ड और अन्धविश्वास एवं अनेक बुराईयों के खिलाफ उठ खड़े होने की आवश्यकता है। आर्य समाज जैसे मानवतावादी संगठन की ओर सबकी निगाहें लगी हुई हैं। अतः हमें लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए सक्रिय होने की आवश्यकता है। उद्घाटन सम्मेलन में मंच पर उपस्थित सभी वक्ताओं एवं विद्वानों का स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट प्रदान कर सम्मान किया गया। सम्मान की इस प्रक्रिया को महासम्मेलन के संयोजक श्री भंवरलाल आर्य, स्वागताध्यक्ष बहन मनीषा पंवार एवं अन्य विशिष्ट कार्यकर्ताओं ने सम्पन्न कराया।

द्वितीय सत्र युवा सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता पुष्कर के पूर्व विधायक एवं महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास, भिनाय कोठी, अजमेर के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ.गोपाल बाहेती जी तथा संयोजन श्री श्री दलपत सिंह आर्य जालौर ने किया।

युवा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री हेमंत शर्मा ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि आज हमारा देश जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें युवाओं को समझाना बहुत कठिन कार्य है। आज युवाओं को सामाजिक सद्भाव का पाठ पढ़ाना आवश्यक है। युवा यदि देश की जिम्मेदारी नहीं लेंगे तो देश गर्त में चला जाएगा। इसलिए युवाओं को संस्कारित करके योग्य बनाना है। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए आर्य समाज और आर्य वीर दल को अपनी भूमिका निभानी होगी।

हरियाणा से पधारे श्री रणदीव सिंह कादियान जी ने कहा कि युवा शक्ति को यदि स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा से अवगत कराया जाएगा तो देश के युवा जागरूक होंगे, इसके लिए अधिक से अधिक शिविर लगाए जाएं। आर्य समाज में ज्यादा से ज्यादा युवा वर्ग को जोड़ना चाहिए।

झारखंड से पधारे पूरे सम्मेलन के आकर्षण श्री हर हर आर्य ने कहा कि शरीर छोटा हो या बड़ा लेकिन दिल का बड़ा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने समाज से बिछड़े लोगों को अपने समाज में संगठित करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि गाय की रक्षा अवश्य होनी चाहिए। उन्होंने गोरक्षा में अपनी भूमिका पर भी प्रकाश डाला। (विदित हो कि हर हर आर्य का कद अत्यन्त छोटा होने के कारण वे सम्मेलन में लोगों का विशेष आकर्षण बने हुए थे, बहुत लोग उनके साथ फोटो खिंचवाते भी देखे गये।)

नागदा से पधारे आर्य युवा नेता श्री कमल आर्य जी ने कहा कि वर्तमान समय में स्वामी आदित्यवेश जी युवा दयानन्द की भूमिका में दिखाई देते हैं। उन्होंने कहा कि युवा इस राष्ट्र की हड्डी का कैल्शियम हैं। यदि युवा संगठित होकर कार्य करेंगे तो सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

शिवगंज से पधारे श्री जीवाराम आर्य ने स्वामी दयानन्द एवं आर्य समाज के जयकारों से अपने विचार रखते हुए कहा कि अत्याचार और भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाना प्रत्येक युवा का कर्त्तव्य है। इसलिए जो युवा ऐसा नहीं कर सकता वह युवा कहलाने का अधिकारी नहीं है।

दिल्ली से पधारे श्री उत्तम आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि छोटे से छोटे कार्य को भी पूर्ण लगन के साथ करना चाहिए तभी कामयाबी हासिल हो सकती है।

रोहतक से पधारीं एकता आर्या ने अपने विचार रखते हुए कहा कि सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। यदि सभी युवा एकजुट होकर कार्य करेंगे तो सकारात्मक परिणाम आएंगे।

युवा सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे श्री गोपाल बाहेती जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आर्य समाज के विचारों का प्रचार होना चाहिए। युवा यदि ईमानदारी से प्रयास करें तो वे आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि इस 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष में अजमेर में अवश्य पधारें। अजमेर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की निर्वाण स्थली है, इसलिए वहाँ अवश्य पधारकर सेवा का मौका दें। युवा सम्मेलन के समस्त वक्ताओं का आयोजन समिति की ओर से स्मृति चिन्ह तथा ओ३म् पट्ट पहनाकर स्वागत किया गया।

युवा सम्मेलन के उपरान्त नारी शक्ति एवं आर्य वीरांगना सम्मेलन प्रारम्भ हुआ इसकी अध्यक्षता आर्य वीरांगना दल की अध्यक्ष श्रीमती लीला भाटी जी ने की तथा संयोजन का दायित्व आर्य वीरांगना दल की मंत्री बहन हिमांशी आर्या जी ने संभाला। सम्मेलन की मुख्य अतिथि जोधपुर शहर की महापौर श्रीमती कुंती परिहार रहीं। इनके साथ शहर विधायक बहन मनीषा पंवार भी मंच पर विराजमान थीं।

राष्ट्रीय एकता में नारी के योगदान विषय पर बोलते हुए आर्य समाज आदर्शनगर जयुपर की प्रधाना एवं आर्य नेता स्व. श्री सत्यव्रत सामवेदी जी की धर्मपत्नी श्रीमती मृदुला सामवेदी जी ने कहा कि आज नारी को समाज में जो सम्मान मिला है उसमें स्वामी दयानन्द जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि हमारे समाज में पहले नारी की बहुत दुर्दशा थी जिसे सुनकर हृदय कांप उठता है। आज देश में नारी को जो सम्मान मिला है उसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का ही योगदान है। हम नारियों के लिए सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द जी ने आवाज उठाई और पढ़ने–लिखने का अधिकार दिलाया। हम सभी स्वामी दयानन्द जी के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते। इसलिए आज मुझे गर्व है कि आर्य समाज संगठन के शीर्षस्थ नेता स्वामी आर्यवेश जी ने जोधपुर की धरती पर इतना विशाल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित कराने का संकल्प लिया और हम सभी नारियों को अपने विचार रखने के लिए मंच प्रदान किया गया मैं पूज्य स्वामी आर्यवेश जी का भी हृदय से धन्यवाद करती हूँ।

महिला सम्मेलन में बहन कल्याणी आर्या जी ने भजनों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये। उनके भजनों को सुनकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गए। उन्होंने अपने भजनों के माध्यम से सभी नारियों को विदुषी बन जाने की प्रेरणा दी।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से पधारीं श्रीमती सुनीता मल्हान जिनके दोनों हाथ एक दुर्घटना में कट गये थे उसके पश्चात् भी वे एक प्रभावशाली प्रेरक के रूप में जानी जाती हैं। वे छात्रावास की वार्डन हैं। दोनों हाथ न होते हुए भी वे जहां सभी कार्य स्वयं करती हैं वहां वे स्थान–स्थान पर जाकर विशेषकर महिलाओं को अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने की प्रेरणा देती हैं। उन्होंने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बताया कि व्यक्ति का संकल्प मजबूत होना चाहिए, वह जो चाहे वही कर सकता है। स्वयं के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि एक दुर्घटना में मेरे दोनों हाथ चले गये थे। लोगों ने कहा कि अब ये क्या करेगी, इसको जीवनभर कष्ट झेलने पड़ेंगे, किन्तु आज मैं आपके सामने हूं और मैं पूरी आशावादी हूं कि मैं हजारों महिलाओं को या समाज के लोगों को आत्म विश्वास और स्वावलम्बन के विचार से प्रेरित कर रही हूं। मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विशाल महासम्मेलन में मुझे आज अपने विचार रखने का अवसर मिला है। मैं अपनी छोटी बहन कुमारी प्रवेश आर्या तथा कुमारी पूनम आर्या की हृदय से आभारी हूं कि उन्होंने मुझे यहां आने के लिए निमंत्रित किया और आयोजकों ने मुझे इस योग्य समझा कि मैं इतने बड़े सम्मेलन के समक्ष अपने विचार रख सकूं। श्रीमती सुनीता मल्हान ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपकारों को स्मरण करते हुए कहा कि यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती न आते तो नारियों की दयनीय अवस्था कभी भी समाप्त नहीं हो सकती थी। महर्षि दयानन्द ने ही महिलाओं को पढ़ने का अधिकार दिलवाया। स्वामी जी ने बाल विवाह, सतीप्रथा और अन्य कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाया था जिसके परिणामस्वरूप आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं। मैं युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को आज इस अवसर पर नमन करती हूं और आयोजकों का धन्यवाद करती हूं।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने महिलाओं का आह्वान किया वे महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऋण को उतारने के लिए पाखण्ड तथा अन्धविश्वास से दूर रहें। महिलाओं को समाज में चल रहे पाखण्ड से बचने की आवश्यकता है, क्योंकि माता निर्माता भवति अर्थात् मां बच्चे का निर्माण करने वाली होती है, यदि मां ही पाखण्ड एवं अन्धविश्वास में लिप्त होगी तो वह बच्चे का निर्माण कैसे कर सकेगी। बहन जी ने बेटा–बेटी में भेद करने की मानसिकता को भी समाज के लिए अभिशाप बताया। उन्होंने कहा कि भारत का संविधान और वेद नर–नारी को एक समान मानते हैं। अतः वेदों और संविधान के अनुसार नर–नारी समानता की भावना को आत्मसात करके बेटियों के जन्मदिन या और विशेष अवसर खुशी के साथ मनाने चाहिए। बेटा पैदा हो या बेटी हमें मन में किसी भी प्रकार की चिन्ता या बोझ नहीं मानना चाहिए।

कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस की आचार्या डॉ. पवित्रा जी ने अपने सम्बोधन में नारी जाति के गौरव पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वेद के मन्त्रों की रचना बहुत सारी ऋषिकाएं विदुषी नारियां भी हुई हैं। अतः नारी गौरव को समाज में स्थापित करने के लिए आर्य समाज को अपना अभियान तेज करना चाहिए। नारियां विदुषी, धार्मिकी तथा संस्कारित होनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शतपथ ब्राह्मण की सूक्ति को उद्धृत करते हुए कहा है

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

राजस्थान की ऐतिहासिक सूर्य नगरी जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

योग साधना से परम शांति प्राप्त की जा सकती है – बहन पूनम आर्या

बेटियों को संस्कारित करना अत्यन्त आवश्यक है – बहन प्रवेश आर्या

कि मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेदः। अर्थात् मां बच्चे का प्रथम गुरु होती है। उस मां को विदुषी तथा धार्मिकी होना आवश्यक है और इसके लिए उन्हें शिक्षित तथा संस्कारित करना पूरे समाज का दायित्व है। बहन पवित्रा जी ने लोगों का आह्वान किया कि वे अपने कन्याओं को गुरुकुलों में पढ़ायें जहां उन्हें उत्तम संस्कार भी मिलेंगे और उच्च शिक्षा भी प्राप्त होगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नारी जाति पर महान उपकार रहा है। हम उन्हें कभी भी नहीं भुला सकते।

कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान की आचार्या वेद विदुषी डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने इस अवसर पर अपना विद्वतापूर्ण व्याख्यान देकर उपस्थित जन समूह को अत्यन्त प्रभावित किया। उन्होंने वेद के मन्त्रों के माध्यम से नारी जाति के गौरव पर विस्तार से प्रकाश डाला। धार्मिक क्षेत्र में नारियों की उपेक्षा, सामाजिक क्षेत्र में नारियों पर हो रहे अत्याचार पर उन्होंने अनेक उदाहरण देकर कड़े शब्दों भर्त्सना की। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समय स्त्रियों को पढ़ने–लिखने का अधिकार नहीं था। वेद मंत्र बोलने, यज्ञ करने–कराने या यज्ञोपवीत धारण कराने से उन्हें वंचित किया हुआ था। वे समाज के किसी भी क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका नहीं निभा सकती थीं। महर्षि दयानन्द जी ने इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और विभिन्न मत–सम्प्रदाय के लोगों से शास्त्रार्थ किये तथा नारी जाति के गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए संघर्ष किया। महर्षि दयानन्द को इसके बदले अनेक बार जहर पीना पड़ा और विरोधियों के विरोध का सामना पड़ा किन्तु वे पीछे नहीं हटे। ऐसे महर्षि के ऋण नारी जाति के ऊपर हैं। अतः महिलाओं को स्वामी दयानन्द जी के उपकारों को सदैव स्मरण रखना चाहिए और उनकी शिक्षाओं को अपनाकर अपने जीवन को उन्नति की ओर ले जाना चाहिए।

नारी शक्ति सम्मेलन की मुख्य वक्ता और बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में जहां नारी जाति पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारों का वर्णन किया वहीं उन्होंने महिलाओं का भी आह्वान किया वे अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ें। आज महिलाएं विज्ञापन की वस्तु के रूप में देखी जाती हैं। महिलाओं का परिवेश पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहा है। उनकी मानसिकता भौतिकवादी बनती जा रही है। नैतिक मूल्यों से महिलाएं दूर होती जा रही हैं। नई पीढ़ी की युवतियां जिस प्रकार की जीवनशैली को अपना रही हैं वह पूरी नारी जाति के लिए शर्मनाक है। ऐसी स्थिति में हमें जहां अपनी लज्जा, शालीनता, सौम्यता, सात्विकता एवं नैतिक मूल्यों की सुरक्षा करनी है। वहीं समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठानी है। उन्होंने अपना अनुभव प्रस्तुत करते हुए बताया कि सन् 2005 में जब स्वामी इन्द्रवेश जी और अग्निवेश जी के नेतृत्व में कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर बेटी बचाओ, समाज बचाओ जन–जागरण यात्रा निकाली गई थी तब मैं और मेरी अनन्य साथी कुमारी प्रवेश आर्या इस अभियान से जुड़े थे तभी से हम दोनों बेटी बचाओ अभियान को चला रहे हैं और हमारे साथ हजारों माताएं, बहनें जुड़ी हुई हैं। इस अभियान के माध्यम से हम जहां कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, घरेलू हिंसा आदि जघन्य अत्याचारों के विरुद्ध जागृति का कार्य कर रहे हैं वहीं स्कूल, कॉलेज में पढ़ने वाली कन्याओं तथा युवतियों को बड़े–बड़े शिविरों के माध्यम से संस्कारित करने का कार्य भी हम निरन्तर कर रहे हैं। 2005 से लेकर अब तक लगभग एक लाख कन्याओं तथा युवतियों में नैतिक मूल्यों, वैदिक संस्कारों तथा आर्य विचारधारा को प्रचारित एवं प्रसारित किया जा चुका है। मैं सभी महिलाओं से अपील करती हूं कि वे भी इस अभियान का हिस्सा बनें। आर्य समाज को जहां महिलाओं के सम्मान एवं गौरव की रक्षा के लिए कार्य करना है वहीं उन्हें वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करके धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से भी मुक्ति दिलानी है। यद्यपि यह बहुत बड़ा कार्य है किन्तु हम आशावादी हैं और हमें पूरा विश्वास है कि यदि हम सभी बहनें, हमारी सभी विदुषियां, आर्य नेत्रियां इस कार्य में लग जायें तो पूरे समाज की तस्वीर बदली जा सकती है। आज इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में नारी शक्ति एवं आर्य वीरांगना सम्मेलन के माध्यम से मैं पूरे समाज का आह्वान करती हूं कि नारी के गौरव को उच्च शिखर तक पहुंचाने के लिए हम सभी प्रयत्न करें और नारी जाति के सम्मान को सुरक्षित करें। महिलाएं भी अपने दायित्व और अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा एवं श्रद्धा के साथ निभाने का संकल्प लें। ऐसा करके हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को अपनी सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

सम्मेलन की विशिष्ट अतिथि श्रीमती कीर्ति भील ने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी जाति एवं दलितों को उचित सम्मान दिलाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आज आदिवासी समाज की सदस्य होने के बावजूद मैं इस मंच पर विराजमान हूं यह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की ही कृपा है। स्वामी जी से पहले महिलाओं को समाज के किसी भी मंच पर आने तथा अपने विचार रखने का अधिकार नहीं था। उन्हें पढ़ने–लिखने से भी वंचित किया गया था। अतः हम सबका यह कर्त्तव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचायें और अपने समाज में जाति–पाति और नार–नारी असमानता के विरुद्ध आवाज उठायें। उन्होंने आयोजकों का धन्यवाद कि वे उन्हें इतने बड़े सम्मेलन में भाग लेने का अवसर प्रदान किया गया।

इस सम्मेलन की मुख्य अतिथि और जोधपुर शहर की महापौर श्रीमती कुंती परिहार ने नारी गौरव पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैदिक काल में नारी का गौरव बहुत ऊँचा था। वैदिक काल में महान विदुषियां हुई जिन्होंने समाज को नई दिशा देने का कार्य किया। किन्तु महाभारत के बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती एक मात्र ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने नारी जाति का उद्धार किया। उन्हें समाज में पढ़ने–लिखने का अधिकार दिलवाया तथा सभी क्षेत्रों में आगे बढ़कर कार्य करने और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का रास्ता प्रशस्त किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने विविध धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड का डटकर विरोध किया था। आज हमें उनके बताये रास्ते पर चलकर अपने जीवन को अन्धकार से प्रकाश की तरफ ले जाना चाहिए। मुख्य अतिथि महोदया ने सम्मेलन की स्वागताध्यक्ष श्रीमती मनीषा पंवार का आभार जताते हुए कहा कि उन्होंने मुझे इस अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन में आमंत्रित करके जो सम्मान प्रदान किया है उसके लिए मैं उनका हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। सम्मेलन हेतु श्रीमती कुंती परिहार ने नगर निगम की ओर से 5 लाख रुपये की राशि भी प्रदान की।

सम्मेलन की स्वागताध्यक्ष मनीषा पंवार ने महापौर सहित अन्य सभी विदुषियों एवं वक्ताओं का आभार प्रकट करके सभी को स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पहनाकर सम्मानित किया। सम्मेलन की संयोजक बहन हिमांशी आर्या ने बीच–बीच में अपने विविध संस्मरणों को प्रस्तुत करके इस सम्मेलन को अत्यन्त रोचक एवं प्रभावशाली स्वरूप प्रदान करने में विशेष भूमिका निभाई।

इस सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती लीला भाटी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं सभी वक्ता विदुषियों और विशिष्ट अतिथि तथा मुख्य अतिथि महोदया का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने महासम्मेलन के आयोजन समिति का भी आभार व्यक्त किया और कहा कि इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में नारी शक्ति सम्मेलन का आयोजन करके पूरी नारी जाति का सम्मान किया गया है।

नारी शक्ति सम्मेलन के उपरान्त आर्यवीर व्यायाम सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में मंच पर विराजमान सभी विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट पहनाकर सम्मानित किया गया। जिन महानुभावों का सम्मान हुआ उनमें मुख्यतया श्री धनराज आर्य पाली, श्री हरदेव सिंह आर्य शिवगंज, श्री भंवरलाल हटवाल पाबूपुरा जोधपुर, श्री मनोज परिहार, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं। इस सम्मेलन का संयोजन श्री लक्ष्मण सिंह आर्य ने किया। कार्यक्रम में छवि आर्या पाली ने अपनी आर्य वीरांगना दल की बहनों का शानदार स्तूप निर्माण प्रदर्शन किया। इसी प्रकार शिवगंज, जालौर और जोधपुर के आर्य वीर और आर्य वीरांगनओं के कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक रहे। श्री उम्मेद सिंह आर्य संचालक आर्य वीरदल जोधपुर ने भी अपने आर्य वीरों के कार्यक्रम प्रस्तुत कराये।

रात्रि 8 बजे से राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आर्य आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन का संयोजन राजस्थान सभा के युवा मंत्री श्री कमलेश कुमार शर्मा ने किया। श्री केशवदेव आर्य तथा श्री सहदेव बेधड़क के ओजस्वी भजनों से राष्ट्र रक्षा सम्मेलन प्रारम्भ हुआ।

इस सम्मेलन में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी नित्यानन्द जी (हरियाणा) ने पूरे राष्ट्र में नशामुक्ति अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज हमारा राष्ट्र अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है जिनमें नशा एक प्रमुख समस्या है। आज का युवक नशे का आदी होता जा रहा है और लाखों घर नशे के कारण बरबादी के कगार पर हैं। सरकारें शराब को आय का साधन बनाकर खुलेआम शराब बिकवाती है यह भारत जैसे देश के लिए लानत की बात है। अतः आर्य समाज को पूरे राष्ट्र में सभी प्रकार के नशे जिनमें शराब, सुल्फा, गांजा, अफीम, स्मैक आदि प्रमुख हैं। उनके विरुद्ध अभियान चलाना चाहिए और केन्द्र सरकार पर दबाव बनाना चाहिए कि वह नशे को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिबन्धित करे।

हिमाचल से पधारे स्वामी वेद प्रकाश जी ने अपने भाषण में युवाओं के चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि जिस देश के युवा चारित्रिक रूप से पतन की ओर जायेंगे वह देश कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकता। स्वामी जी ने बताया कि आज के युवक अश्लीलता एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं। उनकी मानसिकता भौतिकवाद से ग्रसित है। खाओ–पिओ मौज करो के सिद्धान्त को प्रमुखता से अपनाकर आज के युवक एवं युवतियां वैदिक संस्कृति या हमारी पुरानी परम्पराओं से हटते जा रहे हैं। ऐसे में राष्ट्र की सुरक्षा निश्चित ही खतरे में है। अतः यह आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में और सामाजिक व्यवस्था में संस्कारों को विशेष महत्त्व दिया जाये। बच्चों को प्रारम्भ से ही अच्छे संस्कार यदि मिलेंगे तो वे बड़े होकर भी उन संस्कारों से प्रभावित रहेंगे और देश की सुरक्षा में अपना योगदान दे सकेंगे।

हरियाण आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी रामवेश जी महाराज ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना करके वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार का दायित्व सौंपा था। आज वेद विरुद्ध मान्यताओं का बोलबाला समाज में तेजी के साथ बढ़ रहा है। महर्षि दयानन्द के संदेश को पुनः हम सभी को आत्मसात करने की आवश्यकता है। धार्मिक अन्धविश्वास तथा पाखण्ड अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है। बड़े–बड़े पदों पर बैठे लोग चाहे वे राजनेता हों, अभिनेता हों या उद्योगपति हों सभी लोग पाखण्ड बढ़ाने में लगे हुए हैं। ऐसी स्थिति में आर्य समाज का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। स्वामी जी ने शराब के विरुद्ध बड़े आन्दोलन की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि आज शराब के कारण गरीब लोग बरबाद हो रहे हैं। शराब पीकर व्यक्ति घर परिवार की चिन्ता करने के बदले आर्थिक एवं शारीरिक रूप से विनाश के रास्ते पर चल रहा है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को अपना आन्दोलनात्मक स्वरूप जनता के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। जब–जब भी आर्य समाज ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आन्दोलन किये हैं तब–तब आर्य समाज को लोगों ने स्वीकार किया है। अतः राष्ट्र की रक्षा के लिए जहां वेद की विचारधारा एवं वैदिक मान्यताओं का पालन आवश्यक है वहीं नशे आदि की बुराईयों से राष्ट्र को मुक्त करना अनिवार्य है। राष्ट्र की रक्षा राष्ट्र में रहने वाले शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति पर निर्भर करती है। इस कार्य को आर्य समाज के सिवाय और कोई नहीं करेगा। अतः हम इस महासम्मेलन से संकल्प लेकर जायें कि हम जहां भी रहते हैं अपने–अपने क्षेत्र में इन बुराईयों के विरुद्ध आवाज उठायें और वैदिक सिद्धान्तों को घर–घर पहुंचायें।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यान के द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने विचार रखते हुए कहा कि वेद सबसे प्रमुख ग्रन्थ है। उन्होंने कहा वेद से बड़ा कोई ग्रन्थ नहीं है। वेद केवल ज्ञान ही नहीं बल्कि भाषा भी देता है। स्वामी दयानन्द जी ने वेद के पठन–पाठन और प्रचार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया था, वेद को जीवन्त करके वेद ज्ञान को आगे बढ़ाया था। उन्होंने कहा कि जब ऋषि मुनियों की बनाई हुई परम्परा को पढ़ेंगे और उस पर चलेंगे तभी भारत विश्वगुरु बनेगा। उन्होंने अपने भाषण के दौरान पाखण्डियों की जमकर बखिया उधेड़ी और सत्य सनातन वैदिक संस्कृति की भूरी–भूरी प्रंशसा की। राष्ट्र रक्षा को एक केन्द्रित करके उन्होंने स्पष्ट किया कि वेद की रक्षा अर्थात् वैदिक सिद्धान्तों की पुर्नस्थापना और धार्मिक अन्धविश्वास को समाप्त करना राष्ट्र रक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जिस राष्ट्र में अवैदिक मान्यताएं होंगी उस

युवा किसी भी राष्ट्र के रीढ़ होते हैं – डॉ. गोपाल बाहेती

नारी जाति पर महर्षि दयानन्द के उपकार गिनाये नहीं जा सकते – कुंती परिहार

राष्ट्र के नागरिक अज्ञान एवं अन्धकार से ओत–प्रोत होंगे। ऐसे नागरिकों से राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता और पाखण्ड और अन्धविश्वास से राष्ट्र कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकता। डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा राष्ट्र रक्षा पर किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम स्वराज्य, स्वराष्ट्र व स्वभाषा आदि की आवाज उठाई। महर्षि ने स्वराज्य का नारा सत्यार्थ प्रकाश में यह लिखकर दिया कि विदेशी राजा कितना भी अच्छा हो वह स्वदेशी राजा से कभी भी उपकारी नहीं हो सकता। स्वामी दयानन्द जी ने अनेक क्रांतिकारियों को राष्ट्र के लिए बलिदान देने की प्रेरणा की थी। अतः राष्ट्र की रक्षा के लिए आर्य समाज को वर्तमान समय की उन समस्याओं के विरुद्ध आवाज उठानी होगी जिनसे राष्ट्र कमजोर हो रहा है। आज शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जब तक शिक्षा में संस्कारों का महत्त्व नहीं होगा तब तक शिक्षा अधूरी रहेगी और ऐसी शिक्षा को प्राप्त कर राष्ट्र की बड़ी जिम्मेदारियों पर बैठे लोगों से राष्ट्र की रक्षा नहीं हो सकती। इसलिए पूरे देश में वैदिक संस्कृति और वेद आधारित शिक्षा को लागू करके राष्ट्र रक्षा के लिए उच्च नागरिक तैयार करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

शहीदे आजम सरदार भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह सिन्धु ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र रक्षा में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्र रक्षा का मंत्र फूंका और अनेक क्रांतिकारियों को राष्ट्र की रक्षा के लिए प्रेरणा दी। उन्हीं की प्रेरणा से हमारे परदादा सरदार अर्जुन सिंह ने यज्ञोपवीत धारण किया था और महर्षि दयानन्द के पक्के अनुयायी बन गये थे। सरदार अर्जन सिंह की प्रेरणा से उनके तीनों पुत्र सरदार किशन सिंह, सरदार स्वर्ण सिंह और सरदार अजीत सिंह स्वतंत्रता आन्दोलन में उतरे और उन्हीं की प्रेरणा से शहीदे आजम सरदार भगत सिंह ने देश की आजादी के लिए फांसी के फंदे को चूमा। राष्ट्र हम सबके लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यदि राष्ट्र ही खतरे में होगा तो हम सब अपने आपको सुरक्षित नहीं रख सकते। आज देश के नवयुवकों को राष्ट्र के प्रति समर्पित होने की भावना से ओत–प्रोत करने की आवश्यकता है। युवा ही राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। मेरी यह धारणा है कि युवाओं को राष्ट्र भक्ति पर मार्ग पर चलने की प्रेरणा आर्य समाज के सिवाय और कोई संस्था नहीं दे सकती। देश में अनेक संगठन हैं किन्तु उनके कार्य योजना में राष्ट्र भक्ति का विषय गायब है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर आयोजित इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सभी आर्यजन यह संकल्प लें कि राष्ट्र की रक्षा के लिए यदि बड़े से बड़ा बलिदान भी देना पड़े तो उसमें पीछे नहीं रहेंगे।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने राष्ट्र रक्षा पर बोलते हुए कहा कि राष्ट्र को जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड, महिला उत्पीड़न व आर्थिक शोषण जैसी ज्वलन्त समस्याओं से खतरा पैदा हो रहा है। इन समस्याओं से राष्ट्र अन्दर से खोखला होता जा रहा है। अतः राष्ट्र की रक्षा के लिए इन समस्याओं के विरुद्ध आर्य समाज को प्रचण्ड आन्दोलन तथा अभियान चलाना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान इस दिशा में शीघ्र ही ठोस कार्य योजना तैयार करेगी और पूरे देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकता तथा अन्धविश्वास के विरुद्ध अभियान चलायेगी। राष्ट्र रक्षा के लिए समर्पित नवयुवक तैयार करने के लिए युवा निर्माण अभियान को और तेज गति प्रदान की जायेगी। उन्होंने सभी विद्वान् वक्ताओं का धन्यवाद किया। इस सम्मेलन के समस्त वक्ताओं को आयोजन समिति की ओर से ओ३म् पट्ट पहनाकर सम्मानित किया गया।

महासम्मेलन के दूसरे दिन 27 मई, 2023 को प्रातः 6 बजे से आर्य वीर दल की शाखा एवं योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम समाप्त होने के उपरान्त कन्या गुरुकुल सासनी की आचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद शतकम यज्ञ प्रारम्भ हुआ। वेद पाठ के लिए गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के ब्रह्मचारी एवं कन्या गुरुकुल सासनी की ब्रह्मचारिणियां उपस्थित थीं। यज्ञ के उपरांत डॉ. पवित्रा जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा आचार्य वेद प्रिय शास्त्री के प्रवचन हुए। इस अवसर पर समस्त यजमानों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के कर–कमलों से सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने संखिप्त उद्बोधन में ओ३म् ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला और कहा कि यह ओ३म् ध्वज पूरे विश्व को एक ईश्वर से जुड़ने की प्रेरणा देता है। यह ओ३म् ध्वज त्याग एवं समर्पण का प्रतीक है। हम आर्यों में त्याग, समर्पण एवं बलिदान की भावना निरन्तर बनी रहनी चाहिए। ध्वजारोहण के उपरांत मुख्य मंच से सामाजिक समरसता सम्मेलन प्रारम्भ हुआ।

प्रथम सत्र में सामाजिक समरसता सम्मेलन प्रारंभ हुआ। जिसकी अध्यक्षता भारतीय सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील जी महाराज ने की तथा संयोजन श्री मनु सिंह अध्यक्ष सर्वधर्म संवाद ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुनील परिहार डाइरेक्टर रिको तथा विशिष्ट अतिथि श्री किरणजीत सिंह सिन्धु रहे, मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पं. माया प्रकाश त्यागी, मोहम्मद अतीक जी चेयरमैन एम.एम.ई.एस. जोधपुर, श्री ज्ञानी जयपाल सिंह हेड ग्रंथी गुरुद्वारा श्री गुरू सिंह सभा, जोधपुर तथा मौलाना ए. आर. शाहीन कासमी आदि मंच पर विराजमान रहे। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन में पधारे सभी अतिथियों का स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट से सम्मान किया गया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने कहा कि हम सबको एक दूसरे से प्रेम एवं मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उन्होंने कई उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे गाय अपने बच्चे के पैदा होने पर उसकी गन्दगी को चाट–चाट कर साफ कर देती है और उसके बाद वह रंभाती है। उन्होंने कहा कि संसार के सभी मनुष्यों को एक दूसरे से खूब प्रेम करना चाहिए। नफरत से दूर रहना चाहिए। उन्होंने गीत के माध्यम से सामाजिक समरसता की बात रखी।

वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यान के द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि वेद में सामाजिक समरसता की बात कूट–कूट कर भरी है। वेद हमेशा मानव को मानव से प्रेम करने की बात सिखाता है। वेद में किसी प्रकार का जातिवाद नहीं है, बल्कि कार्य के आधार पर विवेचन किया गया है। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद में 10,522 मंत्र हैं। जिन महिलाओं ने वेद का साक्षात किया है उनके नामों का भी उन्होंने उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि स्वामी दयानन्द जी ने दुनिया के पाखंडियों को ललकारते हुए कहा कि वेद पढ़ने का सभी को अधिकार है। उन्होंने वेद के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सामाजिक समरसता की बात रखी। उन्होंने कहा कि वैदिक ग्रन्थों को पढ़ने से ही सही ज्ञान मिलेगा। फेसबुक और सोशल मीडिया से सही ज्ञान नहीं मिल सकता।

शहीदे आजम भगत सिंह जी के भतीजे श्री किरणजीत सिंह ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज हम सब लोगों ने बहुत तरक्की कर ली लेकिन परिस्थिति बहुत ज्यादा बदली नहीं है, आज भी देश में बहुत कुछ सामाजिक समरसता के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने आजादी के समय की अनेक बातें बताई। उन्होंने कहा कि मेरा पूरा परिवार आर्य समाज की विचारधारा से ओत प्रोत रहा है। उन्होंने भगत सिंह जी की जेल के कुछ संस्मरण सुनाये। उन्होंने बताया कि भगत सिंह ने छुआछूत पर प्रहार करने का कार्य किया था और यह सब कार्य करने के पीछे स्वामी दयानन्द जी के विचारों का ही प्रभाव रहा है।

इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि समाजसेवी श्री सुनील परिहार जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि समाज में सभी को मिलकर, एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी धर्म के लोगों को मिलकर समाज में सामाजिक समरसता पैदा करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी को एकजुट होकर विखण्डन रूपी ताकतों का डटकर मुकाबला करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज जिस तरह से शिक्षा के माध्यम से बच्चों में सामाजिक ताने–बाने को छिन्न भिन्न करने की कोशिश करने का दुष्चक्र चला जा रहा है, इसे नाकाम करने की आवश्यकता है। पूरे देश में पाखण्ड का बोलबाला बढ़ता जा रहा है, पूरे देश में जातिवाद जैसे दुष्चक्र के माध्यम से समाज में नफरत फैलाई जा रही है।

अपने विचार रखते हुए मौलाना शाहीन कासमी जी ने कहा कि सभी को मिलजुल कर समाज को आगे बढ़ाने का कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब देश में भाईचारा बना रहता है, सामाजिक समरसता बनी रहती है तो देश तरक्की करता है। उन्होंने कहा स्वामी दयानन्द जी का सपना था कि देश से पाखण्ड खत्म करके पूरे देश को सामाजिक समरसता के एक सूत्र में पिरोया जाना चाहिए। उन्होंने अपने विचार रखने के दौरान स्वामी अग्निवेश जी के विचारों और कार्यों की भूरी–भूरी प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में श्री ज्ञानी जयपाल सिंह जी, श्री राजू सहित अनेक वक्ताओं ने भी अपने–अपने विचार रखे।

सामाजिक समरसता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए भारतीय सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील जी महाराज ने समाज में साम्प्रदायिक सौहार्द का वातावरण तैयार करने के लिए आर्य समाज से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की अपील की। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पूरे विश्व के महान् दार्शनिक एवं समाज सुधारक थे और उन्होंने वसुधैव कुटुम्कम् के विचार को दुनिया के सामने रखा था। सर्वधर्म संसद का गठन आर्य समाज के क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने किया था और उन्होंने ही मुझे यह झंडा सौंपा था। मैं उनके कार्य को आगे बढ़ा रहा हूं इसके लिए आप सबका सहयोग अपेक्षित है। उन्होंने कहा कि अब वह समय आ गया है, इसलिए आर्यों उठो और सामाजिक सद्भाव को कायम करने का प्रयास करो। आज देश गर्त की ओर जा रहा है, लोगों को लोगों से लड़ाने की जो कोशिश हो रही है उसे नाकाम करने के लिए आर्य समाज को ही आगे आना होगा नहीं तो आर्य समाज और अन्य सामाजिक सद्भाव को कायम करने वाले संगठनों का अंत हो जायेगा। उन्होंने कहा कि इस कार्य में स्वामी अग्निवेश जी एक ऐसे संन्यासी थे जो पाखण्ड और अंधविश्वास का डटकर मुकाबला करते थे और वे कभी भी पाखंडियों के आगे झुके नहीं। हमें आज उनकी कमी खल रही है। आज हम सबको स्वामी अग्निवेश जी के कार्य को आगे बढ़ाते हुए पूरे देश में सामाजिक समरसता कायम करने के लिए एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है।

सामाजिक समरसता सम्मेलन के उपरान्त मध्यान्ह 4 से जोधपुर नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें हजारों आर्यजनों ने भाग लिया। शोभा यात्रा का शुभारम्भ रातानाड़ा रोड से हुआ तथा

जिन विशिष्ट अतिथियों को सम्मानित किया गया उनके नाम इस प्रकार हैं

डॉ. लक्ष्मणदास आर्य प्रधान, मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट अध्यक्ष हरियाणा किसान यूनियन जीन्द, श्री रामपाल शास्त्री, कार्यकारी प्रधान मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली, आचार्य चन्द्रदेव जी प्रधान मानव सेवा प्रतिष्ठान, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री बलजीत सिंह सांगवान एवं श्री भूपेश शास्त्री मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली, आचार्य महावीर सिंह शास्त्री अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा, श्री दयाकृष्ण काण्डपाल मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, श्री दीपक सिंह पंवार (जोधपुर), श्री कमल अर्य (आर्य समाज नागदा, मध्य प्रदेश), श्री उत्तम आर्य प्रधान आर्य युवक परिषद् दिल्ली, श्री हरहर आर्य प्रधान आर्य युवक परिषद् (झारखण्ड), श्री रणदीप सिंह आर्य (पानीपत), श्री राम कुमार सिंह आर्य प्रधान केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली, श्री विनोद कुमार आर्य जालौर, स्वामी सोम्यानन्द (मथुरा), स्वामी आर्येषानन्द (पिंडवाड़ा), स्वामी सूर्यवेश उपाध्यक्ष संन्यास आश्रम गाजियबाद, स्वामी निर्भयानन्द हाथरस, स्वामी निर्भयानन्द बाड़ी, रायसेन मध्य प्रदेश, स्वामी आत्मानन्द पिनाहट, चम्बल, स्वामी व्रतानन्द भरतपुर, स्वामी संगीतानन्द मथुरा, स्वामी योगानन्द आगरा, स्वामी सम्पूर्णानन्द आगरा, स्वामी आत्मानन्द मथुरा, स्वामी शान्तानन्द अलीगढ़, स्वामी प्रकाशानन्द मथुरा, स्वामी वेदानन्द मथुरा, स्वामी सर्वानन्द पिनाहट, स्वामी मुक्तिवेश रोहतक, चौ. बद्रीराम जाखड़ पूर्व सांसद जोधपुर, श्री राजेन्द्र मुनि वानप्रस्थ कोटा, श्री सहदेव सिंह बेधड़क, बहन कल्याणी आर्या हिसार, श्री अशोक आचार्य ग्वालियर, श्री ऋषिराज आर्य छत्तीसगढ़, श्री मधुरम आर्य अमृतसर, श्री किशन लाल आर्य भोपाल, श्री योगेश्वर मुनि जीन्द, हरियाणा आदि को स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट पहनाकर सम्मानित किया गया।

दलितों एवं आदिवासियों को उचित सम्मान दिलाया ऋषि दयानन्द ने – कीर्ति भील

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोधपुर की आयोजन समिति के अधिकारी एवं सदस्य जिन्होंने अथक प्रयास एवं पुरुषार्थ करके सम्मेलन को सफल बनाया उनके नाम इस प्रकार हैं

श्री बिरजानन्द एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री नारायण सिंह आर्य उपप्रधान, श्रीमती मनीषा पंवार स्वागताध्यक्ष एवं विधायक जोधपुर शहर, स्वामी आदित्यवेश मुख्य संयोजक, श्री भंवरलाल आर्य संयोजक, श्री कमलेश शर्मा मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री चांदमल आर्य अध्यक्ष आर्य वीरदल राजस्थान, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य महामंत्री आर्य वीरदल राजस्थान, श्री हरि सिंह आर्य अध्यक्ष आर्य वीरदल जोधपुर, श्री दलपत सिंह आर्य सह–संयोजक, श्री हरदेव सिंह आर्य सह–संयोजक, श्री भंवरलाल हटवाल सह–संयोजक, श्री शिव प्रकाश सोनी सह–संयोजक, श्री पूनम सिंह शेखावत सह–संयोजक, श्री धनराज आर्य सह–संयोजक।

आयोजन समिति के सदस्य :– श्री गजे सिंह भाटी, श्री हेमन्त शर्मा, श्री पृथ्वी सिंह भाटी, श्री रोशन लाल आर्य, डॉ. लक्ष्मण सिंह आर्य, श्री उम्मेद सिंह आर्य–संचालक आर्य वीरदल जोधपुर, श्री सौभाग सिंह चौहान, श्री गणपत सिंह आर्य, श्री महेश आर्य, श्री गुलाबचन्द आर्य, श्री जतन सिंह भाटी, श्री बीरूमल आर्य, श्री हनुमान प्रसाद गौड़, श्री कमलेश सांखला, श्री चैन सिंह पंवार, श्री जयदीप सिंह आर्य, श्री अशोक आर्य, श्री द्वारका दास आर्य, श्री देवेन्द्र सा, श्री अभिषेक गहलोत, श्री रामपाल, श्री श्रवण आर्य, श्री मनोज कुमार परिहार, श्री अमित सिंह निर्वाण, श्री लक्ष्मण सिंह गहलोत, श्री नरेन्द्र सिंह, श्री विक्रम सिंह आर्य, श्री अमृतलाल, श्री दुर्गा सिंह सेखावत, श्री प्रताप सिंह, श्री राकेश कपूर, श्री निरंजन आर्य, श्री राजेश देवड़ा, श्री कुलदीप सिंह सोलंकी, श्री पूनम सिंह शेखावत, श्री दीपक सिंह पंवार, श्री विनोद आचार्य (सभी जोधुपर), श्री पुरुषोत्तम दास, श्री शंकरलाल शर्मा, श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा, श्री नाथूलाल शर्मा, श्री बलदेव राज आर्य, श्री विकास आर्य, श्री जितेन्द्र हरितवाल, श्री अनिल शर्मा, श्री पवन शर्मा (सभी जयपुर), श्री कृष्ण कुमार तिवारी, श्री प्रशान्त सिंह, श्री शिवदत्त आर्य, श्री विनोद आर्य, श्री कांतिलाल आर्य, श्री अम्बिका प्रसाद तिवारी, श्री वरुण शर्मा, श्री छगन आर्य, श्री भरत मेघवाल, श्री जगदीश आर्य, श्री मोहन लाल भादरू, श्री गणपत आर्य, श्री कन्हैयालाल मिश्रा, श्री छगन नाथ (सभी जालौर), श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री जीवाराम आर्य, श्री बनवारी लाल अग्रवाल, श्री सुरेश मित्तल, श्री दिनेश आर्य, श्री नवरत्न आर्य, श्री पुरुषोत्तम आर्य, श्री मदन आर्य, श्री कान्हाराम चौहान, श्री देवाराम चौहान (सभी शिवगंज सिरोही), श्री दिलीप कुमार परिहार, श्री मधाराम, श्री विजयराज आर्य, श्री कुन्दन आर्य, श्री देवेन्द्र मेवाड़ा, श्री महेन्द्र प्रजापति, श्री वासुदेव शर्मा, श्री दिलीप गहलोत, श्री गणपत भदोरिया, श्री घेवर चन्द्र आर्य, श्री हीरालाल आर्य, श्री गजेन्द्र अरोड़ा (सभी पाली), श्री राजेन्द्र गहलोत, श्री अचल चन्द्र गहलोत, श्री गोविन्दराम परिहार, श्री मंगला राम पंवार, श्री बागाराम पंवार, श्री लक्ष्मणराम कछवाह, श्री मांगीलाल पंवार, श्री लूणचन्द चौहान, श्री गणपत लाल गहलोत, श्री दिलीप गहलोत, श्री जितेन्द्र गहलोत, श्री नरेश पंवार, श्री रामचन्द्र कछवाह, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री अरविन्द पुरोहित (सभी बालोतरा), श्री धर्मवीर आर्य, वैद्य सुलतान सिंह, श्री कैलाश कर्मठ, मा. हरि सिंह आर्य, श्री नरेन्द्र शर्मा, श्री रामानन्द आर्य, श्री ललित यादव, श्री मीर सिंह आर्य, श्री रामनिवास आर्य (सभी अलवर), श्री गोविन्द शर्मा, श्री गणेश वैष्णव, श्री सत्यनारायण शर्मा, श्री किशन कुमार वैष्णव, श्री राजेन्द्र आर्य (सभी अजमेर), श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री गिरधर सिंह एडवोकेट, श्री अंकित जैन (सभी सवाई माधोपुर), श्री देव प्रकाश मिश्रा, श्री शिवनारायण उपाध्याय, श्री रघुवीर सिंह कछवाह, श्री राजेन्द्र पावटा, श्री भरत कछवाह, श्री इन्द्र कुमार सक्सेना (सभी कोटा), श्री अनन्तराम आर्य, श्री विनोद कुमार, श्री भूपेन्द्र आर्य, श्री गिरिराज प्रसाद शर्मा, पं. राकेश आर्य, श्री सुनील शर्मा (सभी भरतपुर व दौसा)।

आर्य वीरांगना दल की सदस्याएं :– श्रीमती लीला भाटी, श्रीमती प्रेमलता आर्या, श्रीमती ललिता, श्रीमती लक्ष्मी शेखावत, श्रीमती किरण सोलंकी, श्रीमती कृष्णा पंवार, श्रीमती सावित्री पंवार, श्रीमती पुष्पा गोयल, श्रीमती भावना तंवर, श्रीमती शोभा जांगिड़, प्रवीना शर्मा, चन्द्रकला आचार्या, प्रेमा कंवर, कुसुम जी, आयुषी आर्या, सुषमा आर्या, लतेश कंवर, ऋद्धि आर्या, इंदिरा सोलंकी, लीना तथा श्रीमती हिमांशी आर्या।

जोधपुर के मुख्य बाजारों से होते हुए शाम को 7.30 बजे शोभा यात्रा सम्मेलन स्थल डी–6, रेलवे सामुदायिक भवन पर समाप्त हुई। शोभा यात्रा का नेतृत्व आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो. विठलराव आर्य जी, कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी यज्ञमुनी जी, स्वामी आदित्यवेश जी, शहीद भगतसिंह जी के भतीजे श्री किरणजीत सिंह जी, जोधपुर शहर की विधायक तथा महासम्मेलन की स्वागताध्यक्ष बहन मनीषा पंवार जी के अतिरिक्त अनेक संन्यासी, विद्वान, आर्य नेता तथा हजारों कार्यकर्ता भाई बहनों ने शोभायात्रा में हिस्सा लिया। इस विशाल शोभायात्रा में केसरिया पगड़ी और स्वामी दयानन्द जी तथा आर्य समाज के जयकारों की गूंज पूरे शहर में सुनाई एवं दिखाई दी।

यह विशाल शोभायात्रा नगर के जिन क्षेत्रों से गुजरती रही वहां के स्थानीय नागरिकों ने जगह–जगह यात्रा का सम्मान किया तथा शोभायात्रा में भाग लेने वाले यात्रियों को स्थान–स्थान पर शरबत, जूस व जल की व्यवस्था करके सम्मानित किया। अनेक स्थानों पर फूलों की वर्षा भी शोभा यात्रा में चल रहे आर्यजनों के ऊपर की गई। नगर के विभिन्न संगठनों एवं व्यापारिक संस्थानों की ओर से आर्य नेताओं एवं आर्य संन्यासियों का माल्यार्पण एवं विविध प्रकार से सम्मान किया गया। भयंकर गर्मी होने के बावजूद भी यात्रियों के जोश को देखते बन रहा था। शोभायात्रा में चल रहे कई आर्य संन्यासियों और बुजुर्ग आर्यजनों की उम्र बहुत होते हुए भी वे पूरे उत्साह के साथ बिना रुके यात्रा में सम्मिलित रहे। शोभायात्रा के दौरान आर्य वीरों ने महर्षि दयानन्द जी के जय, आर्य समाज अमर रहे तथा वैदिक धर्म के जय के नारों से आकाश को गुंजायमान कर दिया। बीच–बीच में आर्य राष्ट्र बनायेंगे, जातिवाद मिटायेंगे। आर्य राष्ट्र बनायेंगे साम्प्रदायिकता मिटायेंगे। आर्य राष्ट्र बनायेंगे नशाखोरी हटायेंगे आदि नारों की रही गूंज। शोभा यात्रा को देखने के लिए लोग अपने–अपने छतों पर खड़े थे और अपनी दुकानों से बाहर आकर वीडियो भी बना रहे थे। इतनी लम्बी यात्रा को देखकर शहर के लोग आश्चर्य चकित हो रहे थे। इस यात्रा का मीडिया के पत्रकार साथियों ने भी भरपूर कवरेज किया। शोभायात्रा को आगे बढ़ाने के लिए पुलिस प्रशासन ने भी अपना भरपूर सहयोग दिया। यह शोभा यात्रा शहर के अनेक चौराहों से गुजरते हुए सम्मेलन स्थल पर पहुंचकर पुनः सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। शोभा यात्रा में शामिल सभी यात्रियों का स्वामी आर्यवेश जी तथा बहन मनीषा जी ने धन्यवाद व्यक्त किया।

रात्रि 8 बजे एक शाम ऋषि दयानन्द जी के नाम संगीत संन्ध्या का कार्यक्रम शुरू हुआ जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपमंत्री श्री हरदेव सिंह आर्य शिवगंज ने की तथा इसका संयोजन आर्य वीरदल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरि सिंह आर्य ने किया। कार्यक्रम के मुख्यअतिथि श्री नरेन्द्र सिंह कछवाहा चाटर्ड एकाउटेंट तथा विशिष्ट अतिथि सर्वश्री आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, स्वामी विजयवेश आदि भी मंच पर विराजमान थे। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ से पधारे युवा गायक ऋषिराज आर्य ने अपनी पूरी टीम के साथ महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर शानदार प्रस्तुति दी। उनके कार्यक्रम से श्रोता अत्यन्त उत्साहित हुए। उसके अतिरिक्त श्री अशोक आर्य ग्वालियर, श्री मधुरम आर्य अमृतसर, स्वामी मुक्तिवेश जी टिटौली, बहन कल्याणी आर्या तथा श्री सहदेव बेधड़क सहित आदि ने महर्षि के जीवन तथा उनके कार्यों से सम्बन्धित भजन प्रस्तुत करके इस भजन संन्ध्या को सार्थक तथा प्रेरणादायक स्वरूप प्रदान किया। कार्यक्रम के अन्त में अध्यक्षीय उद्बोधन श्री हरदेव सिंह ने दी और सभी उपदेशकों का धन्यवाद देकर कार्यक्रम को सम्पन्न किया। आयोजन समिति की ओर सभी भजनोपदेशकों को स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट भेंटकर सम्मानित किया।

28 मई, 2023 को प्रातः 6 बजे से आर्य वीरदल की शाखा तथा योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसे श्री उम्मेद सिंह आर्य तथा बहन पूनम आर्या ने संचालित किया। तत्पश्चात् चतुर्वेद शतकम् यज्ञ आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। तीन दिन से चल रहे चतुर्वेद शतकम की पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे हुई। तत्पश्चात् सभी यजमानों को स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट देकर सम्मानित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, युवा वैदिक विद्वान् डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार तथा आचार्य वेद प्रिय के प्रवचनों के उपरान्त शांति पाठ के द्वारा यज्ञ सम्पन्न हो गया। प्रातः 10 बजे ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य के कर–कमलों से किया गया। ध्वजरोहण के उपरान्त अपने संक्षिप्त उद्बोधन में प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने समस्त आर्यों का आह्वान किया कि परमपिता परमात्मा के निज नाम ओ३म् की पताका हम सबके लिए प्रेरणादाई है। ईश्वर की इस सृष्टि को हमें त्याग, समर्पण एवं परोपकार की भावना से सुन्दर बनाना चाहिए। ईश्वर की उपासना का एक तरीका यह भी है कि ईश्वर के बनाये नियमों का पालन करते हुए सृष्टि को सुव्यवस्थित रखने में अपना योगदान दें।

ध्वजरोहण के उपरान्त मुख्य मंच से समापन समारोह तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका विषय पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का अन्तिम सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने की तथा इसका संयोजन युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं आर्य वीरदल राजस्थान के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य ने संयुक्त रूप से की।

इस अवसर पर श्री सहदेव बेधड़क जी, बहन कल्याणी आर्या एवं अन्य भजनोपदेशकों ने अपने भजनों के माध्यम से स्वंतन्त्रता आंदोलन में आर्य समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला।

स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाज की भूमिका सम्मेलन में बोलते हुए उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गोविंद सिंह भंडारी जी ने कहा कि देश के स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आर्य समाज सदैव से देश के ज्वलंत मुद्दों को लेकर समय–समय पर आन्दोलन रत रहा है। उन्होंने कहा कि हम उत्तराखंड में आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुरूप अनेक कार्य करते रहते हैं। पशुओं की रक्षा के लिए कई आंदोलन किया और आगे भी अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए कार्य करता रहूँगा।

सम्मेलन में मॉरीशस से डॉ. उदय नारायण गंगू पूर्व कुलपति मॉरीशस विश्वविद्यालय एवं पूर्व प्रधान आर्य समाज मारीशस ने वीडियो के माध्यम से अपने विचार रखते हुए कहा कि आर्य समाज की शिरोमणि सभा के निर्देशन में जोधपुर में यह जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो रहा है ऐसे सम्मेलन समय–समय पर आयोजित होते रहने चाहिए जिससे ऋषि दयानन्द जी की विचारधारा से लोगों को अवगत कराया जा सके। इस कार्यक्रम के आयोजन के लिये मैं स्वामी आर्यवेश जी की प्रंशसा करता हूँ तथा सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता हूँ।

हालैण्ड के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. नरदेव यजुर्वेदी जी ने वीडियो के माध्यम से अपने संदेश भेजकर अपने विचारों से लोगों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने इस अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन समिति को बधाई देते हुए वैदिक विचारधारा के लिए समर्पित स्वामी दयानन्द जी को नमन किया और कहा कि वेद प्रचार के कार्य में हम सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। जोधपुर वासियों की भी उन्होंने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

आर्य प्रतिनिधि सभा, छत्तीसगढ़ के महामंत्री डॉ. कमल नारायण आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि स्वामी दयानंद जी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए यज्ञ एवं योग को आधार बनाकर छत्तीसगढ़ तथा अन्य प्रांतों में हम बड़े–बड़े यज्ञ करवाते हैं। उन्होंने कहा कि हम वर्तमान नेतृत्व स्वामी आर्यवेश जी में पूर्ण विश्वास रखते हुए ऋषि के मिशन को आगे बढ़ाते रहेंगे। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक सभा का नेतृत्व आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के हाथों में होना चाहिए क्योंकि ऋषि के विचारों के अनुरूप कार्य संन्यासी के द्वारा ही हो सकता है।

शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह जी ने कहा कि उनके परिवार और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों पर आर्य समाज और स्वामी दयानंद जी की अमिट छाप रही है। स्वामी दयानन्द जी ने पूरे देश में स्वतंत्रता की अलख जगाई जिसकी बदौलत देश ने स्वतंत्रता प्राप्त की। उन्होंने कहा आज देश आजाद होने के बावजूद भी अनेक बुराइयों और कठिनाइयों से जूझ रहा है, इसलिये हम सभी को मिलकर पूरे देश को पाखंड और अंधविश्वास से मुक्त करवाने तथा सकारात्मक कार्यों को करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी शहीदों के सपनों का भारत नहीं बन सका। उन्होंने कहा कि एक बार पाकिस्तान में शहीद भगत सिंह जी का शहीदी दिवस मनाया गया जिसमें मुझे भी

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार करें आर्यजन – स्वामी यज्ञमुनि

पूरे देश में राष्ट्रीय स्तर पर शराबबन्दी लागू हो – स्वामी नित्यानन्द

संस्कार विहीन समाज से राष्ट्र रक्षा सम्भव नहीं – स्वामी वेद प्रकाश

आमंत्रित किया गया था और मैं वहां गया तो वहाँ के लोगों ने नारे लगाना शुरू किया कि सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां सरहद के इस पार भी जिंदा हैं और सरहद के उस पार भी जिंदा हैं। उन्होंने कहा कि वहाँ के लोगों ने बताया कि शहीद भगत सिंह का उस समय का जो गांव है और वहां जो बाग है उसका नाम आज भी आर्यों के बाग के नाम से मशहूर है।

न्यूयार्क (अमेरिका) आर्य समाज के धर्माचार्य डॉ. अमरजीत शास्त्री जी ने अपने वीडियो संदेश के माध्यम से आर्य समाज और स्वामी दयानंद जी के कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि आज समाज चाहे जितना डिजिटल हो जाये लेकिन ऋषियों की परम्परा को भुलाया नहीं जा सकता। स्वामी दयानंद जी की विचारधारा 7 समुंदर पार भी विद्यमान है। मैं जोधपुर वासियों को साधुवाद देते हुए नमन करता हूँ जिन्होंने इतना बड़ा सम्मेलन आयोजित किया। उन्होंने कहा वेद की विचारधारा किसी जाति, धर्म, मजहब की नहीं है बल्कि सारे संसार की है।

वैदिक विद्वान् डॉ. नरेंद्र वेदालंकार जी ने अपने विचार रखते हुए आजादी में आर्य समाज और स्वामी दयानंद जी की भूमिका पर जोरदार तरीके से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वेद के प्रचार और प्रसार को आगे बढ़ाने में हम सभी को उद्यत रहना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सम्मेलन में उपस्थित आर्यजनों का आह्वान किया कि हमें महर्षि दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए कृत संकल्प होना चाहिए। जोधपुर में अंग्रेजों ने महर्षि दयानन्द जी को जहर दिलाया और उनकी षड्यन्त्र द्वारा हत्या की गई। इसलिए ऋषि दयानन्द का स्मरण करके हम सभी को उनके विचारों को और तेजी के साथ फैलाना चाहिए। इस महासम्मेलन में आने से मुझे अत्यन्त ऊर्जा प्राप्त हुई है क्योंकि मैं देख रहा हूँ सम्मेलन में भारत के अनेक प्रदेशों से आर्य भाई, बहन भारी संख्या में पहुंचे हुए हैं और जोधपुर के आर्य वीर इतने बड़े सम्मेलन की व्यवस्था में दिन–रात एक करके जुटे हुए हैं। अतः यह सम्मेलन हम सबके लिए आशा की एक नई किरण का कार्य करेगा। मैं स्वामी आर्यवेश जी के साथ कई देशों में आर्य समाज के सम्मेलनों में सम्मिलित हो चुका हूं किन्तु जितना जोश–खरोश एवं उत्साह इस महासम्मेलन में देखने को मिला है उतना और कहीं भी देखने को नहीं मिला। सबसे अधिक प्रसन्नता एवं प्रेरणा की बात यह है कि हमारी बेटी मनीषा पंवार जो जोधपुर शहर से विधायक हैं और इस महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए जिन्होंने अपनी पूरी शक्ति झोंक रखी है। यह हम सबके लिए विशेष गर्व की बात है। महर्षि दयानन्द का देश की आजादी के आन्दोलन में योगदान सर्वविदित है। आजादी के आन्दोलन में जेलों में जाने वाले सत्याग्रही तथा अनेक यातनाएं सहने वाले लोगों में सर्वाधिक संख्या आर्यों की थी।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि देश की आजादी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला शायद ही कोई क्रांतिकारी रहा होगा जो आर्य समाज और स्वामी दयानंद जी से अछूता रहा होगा। उन्होंने कहा वेद सार्वकालिक ग्रन्थ है और उसी के आधार पर स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश को लिखकर हम सबको एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ दिया। आज आवश्यकता है कि वेद की मान्यताओं को लागू करके कार्य किया जाए। उन्होंने कहा जब तक पाखण्डमुक्त समाज, जातिवाद मुक्त समाज नहीं बनाया जाएगा तब तक भारत का सही विकास नहीं हो सकता। उन्होंने कहा वेद हमें 'वसुदेव कुटुमकम्' की भावना को सिखाता है। आपस में प्रेम और सद्भाव से रहने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानंद जी एक ऐसे ऋषि थे जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके पूरे राष्ट्र को जगाने का कार्य किया। उन्होंने बताया कि स्वामी दयानंद जी ने देश की आजादी के लिए क्रांतिकारियों में जोश भरने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि आज आओ हम सब यहां से संकल्प लेकर जाएं कि साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई लड़ेंगे, नारी अस्मिता की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ेंगे, जातिवाद मुक्त समाज की अवधारणा के लिए कार्य करेंगे, राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना पूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि देश में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ यदि हम लड़ाई लड़ते हैं तो यही स्वामी दयानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि आर्य समाजी जहाँ–जहाँ हैं उन सभी प्रान्तों में सम्मेलन आयोजित करके स्वामी दयानंद जी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करें तथा उनके विचारों से जन–जन को अवगत कराएं। उन्होंने प्रधानमंत्री से अपील की कि नए संसद भवन में स्वामी दयानंद जी की एक तस्वीर अवश्य लगवाने का कार्य करें। उन्होंने कहा जिसकी संकल्पशक्ति मजबूत नहीं होती वह कुछ नहीं कर सकता है, इसलिए मजबूत संकल्प शक्ति के साथ कार्य करें सफलता अपने आप मिलेगी।

कार्यक्रम के अन्त में स्वामी आर्यवेश जी ने सम्मेलन में पधारे सभी आर्य महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले कार्यकर्ताओं की प्रशंसा की तथा मीडिया कर्मियों एवं राजस्थान सरकार के नगर निगम तथा सम्मेलन में अपना–अपना योगदान देने वाले सरकार के सभी विभागों का भी धन्यवाद किया।

अन्त में सम्मान समारोह प्रारम्भ किया गया। सम्मान की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई और विधिवत रूप से आयोजित सम्मान समारोह में विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों, प्रमुख कार्यकर्ताओं, समस्त संन्यासियों, वानप्रस्थियों आदि के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजन समिति के सभी सदस्यों, विभिन्न समितियों के संयोजकों तथा विशिष्ट सहयोगियों का स्मृति चिन्ह तथा ओ३म् पट्ट देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।